AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

छात्रों को सीख : मस्ती करें पर लक्ष्य न भूलें

धूमधाम से मना लविवि का 102वां स्थापना दिवस, विशिष्ट पूर्व छात्र सम्मानित, वर्तमान छात्रों को दिया सफलता का मंत्र

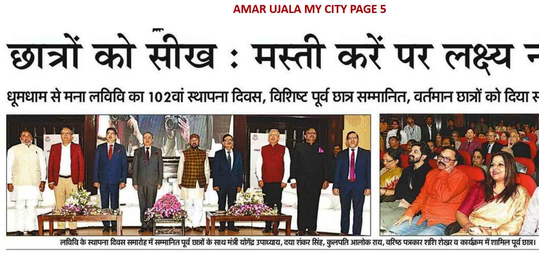
लविवि के स्थापना दिवस समारोह में सम्मानित पूर्व छात्रों के साथ मंच पर मौजूद योगेंद्र उपाध्याय, दया शंकर सिंह, कुलपति आलोक राय, वरिष्ठ पत्रकार रवीश रंजन व वरदीक्षा में शामिल पूर्व छात्रा - अमर उजाला

माई स्टिटी रिपोर्टर

लखनऊ। वो कैंटीन के सामने-घटती... टैगोर लाइब्रेरी की किताबें... छात्रसंघ भवन की अड़ंबेबाजी... आंदोलनों चौराहों की चाय... और दोस्तों संग मस्ती, ऐसा लगता है जैसे यह दिनों की बात है। आज इस परिसर में किसी ने 30 जो किसी ने 35 साल पार कर लिए रहा, लेकिन जैसे ही कैंटीन में पहुंचे एकाएक सब सामने आ गया। ऐसे में खुद को रोक पाना मुश्किल था। कुछ की तो आंखें नम हो गईं। मौका था लखनऊ विश्वविद्यालय के 102वें स्थापना दिवस समारोह का।

महात्मीय हाल में आयोजित समारोह में अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट स्थान पर पहुंचने वाले छह पूर्व छात्रों को उच्च मंत्री योगेंद्र उपाध्याय, परिवहन मंत्री ने पूर्व छात्र दयाशंकर सिंह व वरिष्ठ पत्रकार रवीश रंजन के सम्मानित किया। इस अवसर पर अपने अनुभव साझा करते हुए सभी पूर्व छात्रों ने अपने शिक्षकों को याद किया, साथ ही वर्तमान छात्रों को यह सुझाव भी दिया कि खूब मौज-मस्ती करें, कैंटीन में समोसे-घटनी खाएं, लेकिन लक्ष्य को भूलने न पाएं। शिक्षकों से संवाद कर अपनी जिज्ञासाओं को शांत कर लक्ष्य पाने का प्रयास करें। इसके साथ ही सभी ने लविवि को नैक में ए प्लस प्लस ग्रेडिंग लाने की बधाई दी। पूर्व छात्र व मुख्य सचिव महाराष्ट्र मनु कुमार श्रीवास्तव ने नीतिगत मैसेज दे अपनी उपस्थिति में, जबकि कार्यक्रम में उनके दिए उपमांकर श्रीवास्तव व वां मधु श्रीवास्तव को सम्मान प्राप्त किया। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने विवि में बदलाव की जानकारी देते हुए सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भुवनेश्वरी भारद्वाज ने किया।

पांच और विवि नैक ए प्लस ग्रेडिंग की कतार में : योगेंद्र उपाध्याय

संवाददाता के मुताबिक अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने लविवि को नैक में ए प्लस प्लस ग्रेडिंग पाने की बधाई देते हुए कहा कि प्रदेश में उच्च शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए लगातार जो प्रयास हो रहे हैं, लविवि उसमें एक लीड करते भी, लेकिन अब राज्यस्तर व सुप्रमाणों के नेतृत्व में बदलाव हो रहा है। लविवि अकेला विवि नहीं लगभग 7 प्रदेश के पांच विवि और नैक में ए प्लस ग्रेडिंग की कतार में हैं। हो सकेगा तो ए प्लस प्लस भी लाए। पहले हमारे बच्चे विदेश पढ़ने जाते थे, अब विदेश के बच्चे यहां पढ़ने आ रहे हैं। लविवि इसका भी एक उदाहरण है। विवि ऐसी जगह है, जहां पर आकर सभी को अपने जवाबदेही का अहसास होगा, कुछ करने की प्रेरणा भी देती है।

प्रोवोस्ट बताते थे, कब पड़ेगी पुलिस की रेड : दयाशंकर सिंह

लविवि के पूर्व छात्र व परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने कहा कि अपने ही विश्वविद्यालय में अतिथि बनना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। आमतौर पर यहां से लोग ऊंचे पदों पर पहुंचे हैं, लेकिन मैंने यहां 10 साल पढ़ाई की। क्योंकि गेस्ट बनने के लिए सबका आशीर्वाद चाहिए होता है। हमारे दो बड़ा महान गुरु थे, एक प्रोवोस्ट सुखर की बात तब भी थी कि कहां जेल जाने की गए, लेकिन निर्णयों नहीं किए गए और आज में प्रशासन अच्छाई की बातें। उन्होंने कहा कि हमारी व्यवस्था में प्रोवोस्ट पहले बताते थे कि पुलिसिया रेड कब पड़ेगी है। हम दिन में छात्रा होस्टल में नहीं बैठते थे ही खाने में ही खाते थे और पढ़ाई के बैठे के बैठर, पोस्टर बनवा दिया करते थे।

युवाओं के सामने अवसर भी हैं, चुनौती भी : शशि शेखर

वरिष्ठ पत्रकार शशि शेखर ने छात्रों से कहा कि हमारे जमाने में मनोबल मिलेगा नहीं था, विचारों का द्वारा विस्फोट नहीं था, संचार की इतनी क्रांति नहीं थी। आपके समाने अवसर भी हैं तो चुनौतियां भी। प्रदेश और देश बदल रहा है। जमाना दहलीजों का है, अगर हमारा भी उदाहरण लेकर आगे बढ़ेंगे तो आप दुनिया को बदल सकते हैं। आप हमारा भी बदलेंगे। आप सबसे अपेक्षा है कि आप अपने शिक्षकों को याद करेंगे। भारत को बदलने में आप अपनी भूमिका निभाएंगे।

पुराने दिनों को याद कर रोमांचित हुए पूर्व छात्र

शशिकांत गोयल, अमर कुमार मोदी, कुलपति, दयाशंकर सिंह, रवीश रंजन, मधु श्रीवास्तव, अनिल भारद्वाज

शिक्षक ध्यान दें, कोई एकलव्य न रह जाए : आशुतोष शुक्ल

वरिष्ठ पत्रकार आशुतोष शुक्ल ने कहा कि मैं अपने जमाने में खूब उधारी के चाय-समोसे खाए हैं और मस्ती भी की है, हम सबके बीच भी अपने सपने को सामने रखा, उसमें कभी नहीं डिगे। उन्होंने कहा कि लखनऊ विश्वविद्यालय के बारे में हमने पढ़े, मैं नहीं चाहूंगा, यहीं रहा भी गया, यहीं पढ़ा हूं और यहीं भी। कहा, इस विवि ने देश को नामवर हीरे दिए हैं। आज भले ही मस्ती करें, लेकिन पढ़ाई से समझौता न करें।

यहीं पढ़ा, यहीं प्यार भी हुआ : जयंती प्रसाद

1984 में विवि से पीएचडी किया है। जयंती प्रसाद कहते हैं इसलिये ही देश बैंकपतो बोर्ड और इंडिया के पर्यावरण सदस्य जयंती प्रसाद अपने विवि के दिनों को याद करके भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि मेरे दिनों की यहीं पढ़े, मैं यहीं पढ़ा, यहीं रहा भी गया, यहीं प्यार हुआ और शादी भी। कहा, इस विवि ने देश को नामवर हीरे दिए हैं। आज भले ही मस्ती करें, लेकिन पढ़ाई से समझौता न करें।

आज जो भी हूं, लविवि की वजह से : ज्ञानराज अवस्थी

1986 में विवि से एमए करने वाले राष्ट्रीय विधि आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति ज्ञानराज अवस्थी ने कहा कि यह मंदिर है जहां पर लखनऊ विश्वविद्यालय का भाव समाहित है। 1986 समय बाद यहां आकर बहुत खुशी हो रही है। हमने यहां अपने जीवन के महत्वपूर्ण दिनों को बिताया है। टैगोर जैसी शख्सियत ने हमने भी खूब उपभोग किया है। यहां पढ़ा के लिए मम कुछ उपलब्ध है। आज भी जो भी यहां आया है, उसने यहां अपने जीवन के महत्वपूर्ण दिनों को बिताया है। आज भी यहां की मस्ती याद, लेकिन पढ़ाई से समझौता न करें।

शिक्षकों का सर्वोत्तम उपयोग करें छात्र : शशि प्रकाश गोयल

1987 में विवि से एमएससी करने वाले, विधिक सलाहकार व वरिष्ठ अधिवक्ता शशि प्रकाश गोयल ने अपने शिक्षकों को याद करते हुए कहा कि हम विवि में नहीं टिक पाते, उन्होंने कहा कि मेरा जन्म उत्तराखंड में, उसके बाद लखनऊ विश्वविद्यालय का छात्र बना। उन्होंने कहा कि अपने शिक्षकों को याद करते हुए कहा कि उनके बताए गए सिद्धांतों को ही आज मैं अपने जीवन में उतारे हुए हूं। उन्होंने कहा कि मेरे जीवन में उनका बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय के बारे में याद करते हुए कहा कि उनके बताए गए सिद्धांतों को ही आज मैं अपने जीवन में उतारे हुए हूं।

लाइब्रेरी व म्यूजियम का किया भ्रमण

लखनऊ। लविवि के 102वें स्थापना दिवस पर गुरुवार को विवि की लाइब्रेरी व म्यूजियम का किया भ्रमण कर जानकारी लेकर की। एमएससी कॉलेज से आए छात्रों के दल ने विवि की लाइब्रेरी में रखी मनु स्मृति, संविधान की मूल प्रति, टॉयलेट की कॉपी, लोक पर्वों आदि को देखा। वे न सिर्फ जानकारी ली, बल्कि उसे नोट भी किया। वहीं, गोयल कॉलेज के आए विद्यार्थियों ने लाइब्रेरी के साथ-साथ विश्वविद्यालय के म्यूजियम का भ्रमण कर यहां की विशिष्टताओं की जानकारी ली। (माई स्टिटी रिपोर्टर)

अवध की रिवायत की पहचान एलयू...

लखनऊ। लविवि के महत्वपूर्ण समारोह में 102 वें स्थापना दिवस पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ। इस दौरान पूर्व छात्रों ने अपने गुरुन बीराज्ञन बने हाल व सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से खूब लालिमा बिखेरी। पूर्व छात्र आशुतोष ने देशी शुद्ध पर बेहतरीन प्रस्तुति दी। मुख्यातिथि मंत्री ने कलाकारों को पारितोषिक प्रदान किया। इस अवसर पर अपने अनुभव साझा करते हुए सभी पूर्व छात्रों ने अपने शिक्षकों को याद किया, साथ ही वर्तमान छात्रों को यह सुझाव भी दिया कि खूब मौज-मस्ती करें, कैंटीन में समोसे-घटनी खाएं, लेकिन लक्ष्य को भूलने न पाएं। शिक्षकों से संवाद कर अपनी जिज्ञासाओं को शांत कर लक्ष्य पाने का प्रयास करें। इसके साथ ही सभी ने लविवि को नैक में ए प्लस प्लस ग्रेडिंग लाने की बधाई दी। पूर्व छात्र व मुख्य सचिव महाराष्ट्र मनु कुमार श्रीवास्तव ने नीतिगत मैसेज दे अपनी उपस्थिति में, जबकि कार्यक्रम में उनके दिए उपमांकर श्रीवास्तव व वां मधु श्रीवास्तव को सम्मान प्राप्त किया। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने विवि में बदलाव की जानकारी देते हुए सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भुवनेश्वरी भारद्वाज ने किया।

सम्मानित होने वाले पूर्व छात्र

यहां के ज्ञान ने मिशन मंगलयान तक पहुंचाया : अनिल भारद्वाज

1987 में विवि से एमएससी करने वाले व वर्तमान में निदेशक विक्रम साराभाई स्पेसपोर्ट अध्यापकार ने कहा कि यहां से बीएससी-एमएससी के दौरान जो ज्ञान मिला, उसी के एक पर चलते पंद्रहवां-1, मामलों और मंगलयान, फिर चंद्रयान-2 से भी जुड़ा रहा हूं। उन्होंने छात्रों को संदेश दी कि बीच-बीच में साथ मेहनत से पढ़ाई भी करें।

यादगार, अद्भुत और भावुक पल के साक्षी बने पूर्व विद्यार्थी

लखनऊ विश्वविद्यालय के 102वें स्थापना दिवस पर विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धि हासिल करने वाले पूर्व छात्र किए गए सम्मानित

लखनऊ विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर अतिथियों को संबोधन में मुख्यमंत्री जी ने कहा कि यहां पढ़ने का सपना मेरा भी था, लेकिन मैं नहीं पढ़ सका। आज मुझे यहां आकर बहुत खुशी हो रही है। हमारे यहां अपने जीवन के महत्वपूर्ण दिनों को बिताया है। उन्होंने कहा कि यह मंदिर है जहां पर हमने जीवन में जो कुछ पाया है, उसे यहां से पाया है। यहां से जो पढ़ाई की है और जो शिक्षा दी है, उसी के कारण मैं आज इस मुकाम पर पहुंचा हूं। मैं उन सभी शिक्षकों को नमन करता हूं। उन्होंने कहा कि यहां पढ़ने का सपना मेरा भी था, लेकिन मैं नहीं पढ़ सका। आज मुझे यहां आकर बहुत खुशी हो रही है। हमारे यहां अपने जीवन के महत्वपूर्ण दिनों को बिताया है। आज भी यहां की मस्ती याद, लेकिन पढ़ाई से समझौता न करें। यहां पढ़ाई के लिए मम कुछ उपलब्ध है। आज भी जो भी यहां आया है, उसने यहां अपने जीवन के महत्वपूर्ण दिनों को बिताया है। आज भी यहां की मस्ती याद, लेकिन पढ़ाई से समझौता न करें।

लखनऊ विश्वविद्यालय के 102वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्यमंत्री जी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए - अमर उजाला

सांस्कृतिक संध्या में दिखी अवध की लोक परंपरा

लखनऊ। लविवि के स्थापना दिवस समारोह की सांस्कृतिक संध्या पुराने दिनों की याद ताजा हुई। विभिन्न विधाओं में प्रस्तुतियों दी गईं। इस दौरान पूर्व छात्रों ने अपने गुरुन बीराज्ञन बने हाल व सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से खूब लालिमा बिखेरी। मुख्यातिथि मंत्री ने कलाकारों को पारितोषिक प्रदान किया। इस अवसर पर अपने अनुभव साझा करते हुए सभी पूर्व छात्रों ने अपने शिक्षकों को याद किया, साथ ही वर्तमान छात्रों को यह सुझाव भी दिया कि खूब मौज-मस्ती करें, कैंटीन में समोसे-घटनी खाएं, लेकिन लक्ष्य को भूलने न पाएं। शिक्षकों से संवाद कर अपनी जिज्ञासाओं को शांत कर लक्ष्य पाने का प्रयास करें। इसके साथ ही सभी ने लविवि को नैक में ए प्लस प्लस ग्रेडिंग लाने की बधाई दी। पूर्व छात्र व मुख्य सचिव महाराष्ट्र मनु कुमार श्रीवास्तव ने नीतिगत मैसेज दे अपनी उपस्थिति में, जबकि कार्यक्रम में उनके दिए उपमांकर श्रीवास्तव व वां मधु श्रीवास्तव को सम्मान प्राप्त किया। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने विवि में बदलाव की जानकारी देते हुए सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भुवनेश्वरी भारद्वाज ने किया।

छह पूर्व छात्रों का सम्मान

लखनऊ विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस समारोह में मुख्यमंत्री जी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए - अमर उजाला

i-NEXT PAGE 4

एलयू के गौरवशाली इतिहास का यादगार जश्न

PICS: DAINIK JAGRAN-I NEXT

पूर्व छात्र विशिष्ट छात्रों को किया गया सम्मानित

मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय रहे मौजूद

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (25 Nov): लखनऊ विश्वविद्यालय का 102वां स्थापना दिवस शुक्रवार को मेहर मुरमाया में मनाया गया। इस दौरान एलयू परिसर भव्य तरीके से सजाया गया। सबसे पहले, नई दिल्ली के अध्यक्ष (पूर्व छात्र 1986), अनिल भारद्वाज, निदेशक, भौतिक प्रयोगशालाएँ, अहमदाबाद (पूर्व छात्र 1987), शशि प्रकाश, सेवानिवृत्त, वर्तमान में भारतीय दिवाला और दिवालियापन बोर्ड के पूर्णकालिक सदस्य, पूर्व छात्र 1984, शशि प्रकाश गोयल, आईएएस, मुख्यमंत्री,उ.प्र. सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव, आशुतोष शुक्ल, दैनिक जागरण, यूपी के राज्य प्रमुख, पूर्व छात्र 1987 और मनु श्रीवास्तव, आईएएस, मुख्य सचिव, महाराष्ट्र सरकार, मुंबई को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

प्रो. आलोक कुमार राय ने सभी का परिचय उपस्थित विश्वविद्यालय परिवार से कराया और विगत वर्ष में विश्वविद्यालय की कुछ उपलब्धियों को गिनाया। उन्होंने विश्वविद्यालय को नैक द्वारा दिए गए ए++ ग्रेड के साथ-साथ एनईपी-2020 के सभी बिंदुओं को लागू करने वाला देश का पहला संस्थान होने की बात कही। इस अवसर पर विश्वविद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन एवं वार्षिक कलैण्डर भी जारी किया गया। डॉ. अनिल भारद्वाज ने अपने विश्वविद्यालय के दिनों को याद किया और चंद्रयान मिशन के बारे में बात की, जिसका वह हिस्सा थे। आशुतोष शुक्ल ने अपने प्रायपाठकों को याद किया, जिन्होंने उन पर अमिट छाप छोड़ी। यहां तक कि वह अपने मूल विभाग के कर्मचारियों को भी याद करने से नहीं चूके। उन्होंने दृढ़ता से इस तथ्य को सामने रखा कि जीवन में हमारा उद्देश्य दूसरों की सेवा करना है। जयंती प्रसाद ने अपने प्रोफेसरों को अच्छी यादों और उनके द्वारा गठित संगीत समूह को याद किया। इतना भावुक हो गए कि उनकी आंखों में आंसू आ गए। न्यायमूर्ति ज्ञानराज अवस्थी ने इस दिन को एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में व्यक्त किया और अपने प्रोफेसरों के प्रति आभार व्यक्त किया। शुक्रवार की शाम को मालवीय हॉल में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ एलयू का 102वां स्थापना दिवस का यादगार समापन हुआ।

अमर मुख्य सचिव शशि प्रकाश गोयल हुए सम्मानित.

सांग बड़ी संख्या में बनी इस साल समारोह का हिस्सा.

रामनीतिक जीवन संघारको का किया काम

कार्यक्रम के दौरान मंत्री दयाशंकर सिंह ने कहा कि अपने ही विश्वविद्यालय में अतिथि बनना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। आमतौर पर यहां से लोग ऊंचे पदों पर पहुंचे हैं, लेकिन मैंने यहां 10 साल पढ़ाई की। क्योंकि गेस्ट बनने के लिए सबका आशीर्वाद चाहिए होता है। हमारे दो बड़ा महान गुरु थे, एक प्रोवोस्ट सुखर की बात तब भी थी कि कहां जेल जाने की गए, लेकिन निर्णयों नहीं किए गए और आज में प्रशासन अच्छाई की बातें। उन्होंने कहा कि हमारी व्यवस्था में प्रोवोस्ट पहले बताते थे कि पुलिसिया रेड कब पड़ेगी है। हम दिन में छात्रा होस्टल में नहीं बैठते थे ही खाने में ही खाते थे और पढ़ाई के बैठे के बैठर, पोस्टर बनवा दिया करते थे।

पता लगाने के लिए कहा की, शशि शेखर ने एक उदाहरण सुनाई कि किस प्रकार शिक्षा मनन जीवन में दिशा की एक ऐसी एलयू की बात सामने रखी है। विश्वविद्यालय एक एक नौरत्नाओं अर्जित है, जिसमें लगातार विश्वविद्यालय हर दृष्टि में बेहतर बना है। अधिकारी तो हो, छात्रावासों में उन्होंने सभी के प्रति अपार प्यार दिया।

एक एसी उन्हड है जो किसी की भी दुख दर्जाने को बयान रखती है। विश्वविद्यालय एक एक नौरत्नाओं अर्जित है, जिसमें लगातार विश्वविद्यालय हर दृष्टि में बेहतर बना है। अधिकारी तो हो, छात्रावासों में उन्होंने सभी के प्रति अपार प्यार दिया।

दैनिक जागरण के राज्य संपादक आशुतोष शुक्ल को भी किया सम्मान.

अवध की लोक परंपराओं के रंग

स्थापना दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने बांधा समा

LUCKNOW (25 Nov): लखनऊ विश्वविद्यालय के 102वें स्थापना दिवस समारोह की सांस्कृतिक शाम पुराने छात्रों के दुरन से सजी। जिसमें अवध की सांस्कृतिक विरासत के विभिन्न रंगों को सभी ने बखूबी पेश किया. चहल, चकचक, शहजोरिया गीत-संगीत, दास्तानगोई आदि के सुर्ख रंगों से मालवीय सभागार सजीव हो उठा. जिसने वहां मौजूद सभी दर्शकों को बांधे रखा. कार्यक्रम की शुरुआत पुराना छात्र आशुतोष के मनमोहक देवी स्तुति के साथ हुई. इसके बाद ताल से ताल मिला शीर्षक प्रस्तुति में बीए गुलीय वर्ष की छात्रा नेला और अवधेश ने मनमोहक गुरुप प्रस्तुति दे प्रशंसा पाई. एक के बाद एक गानदार प्रस्तुतियों के बाद पूरा सभागार अध्यात्म, भक्ति, प्रेम, विरह और मस्ती में डूबता चला गया। इसके बाद लखनऊ की सांस्कृतिक विरासत को पेश करते हुए लखनऊ की शान कहे जाने वाले चकचक ने अपनी प्रस्तुति दी. इसमें उन्होंने लखनऊ की मशहूर चीजों को याद करते हुए अपने अंदाज में पेश किया. इसके बाद शहजोरिया ने अपनी प्रस्तुति दी. इसमें शुरुआत में ही उन्होंने अपने अंदाज में पेश किया. इसके बाद दास्तानगोई ने अपनी प्रस्तुति दी. इसमें उन्होंने अवध की सांस्कृतिक विरासत को पेश किया. इसके बाद चहल